International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(3): 13-15

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3): 13-15
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 27-03-2015
Accepted: 12-04-2015

डॉ. सुशील कुमारी
असि. प्रोफेसर (संस्कृत विभाग),
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली–110007

Correspondence
डॉ. सुशील कुमारी
असि. प्रोफेसर (संस्कृत विभाग),
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली–110007

महर्षि बाल्मीकि की करुण रसाभिव्यक्ति

डॉ. सुशील कुमारी

तमसा नदी के तट पर विचरण करने वाले महर्षि बाल्मीकी ने कामासक्त क्रौंचमिथुन में पुरुष का व्याध द्वारा निर्मम वध होते देखा तो उनका शोक संविग्न हृदय ही मानों श्लोक रूप में फूट पड़ा। अभिव्यक्ति और करुणा ने महर्षि को कवि बना दिया।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधी काममोहितम्।। [1]

रामायण में प्रधान रस करुण की व्यंजक परिस्थितियों की संख्या एवं रस की प्रगाढ़ता बहुत अधिक है। अनेक प्रसंगों में करुण रस विद्यमान है। परन्तु अयोध्याकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड तो पूर्णरूप से मानो करुण रस की अभिव्यक्ति है। वहां करुण रस अपनी चरम सीमा में अभिव्यक्त हुआ है। इसके अतिरिक्त अरण्यक काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, युद्धकाण्ड, सुन्दरकाण्ड इत्यादि में भी यत्र–तत्र कारुणिक प्रसंग उपलब्ध हैं। आदिकवि बाल्मीकि की यह विशेषता है कि उन्होंने प्रतिनायक पक्ष के शोक का भी सजीव चित्रण किया है। शोकभाव के सशक्त चित्रण के कारण ये सभी प्रसंग करुण रस की श्रेणी में आते हैं। [2]

कैकेयी की वरदान याचना से विकल राजा दशरथ राम को बुलवाते हैं। वेदना तथा आत्मग्लानि से इतने पीड़ित दिखाई पड़ते हैं कि राम को अपने नेत्रों से देखने के लिए साहस भी नहीं कर पा रहे हैं और न ही कुछ बोल पा रहे हैं। अश्रुपूर्ण नेत्रों से महाराज दशरथ अपने मुख से केवल 'राम' शब्द ही निकाल रहे हैं–

रामेत्युक्त्वा तु वचनं वाष्पपर्याकुले क्षणः।
शशाक नृपतिर्दीनो नेक्षितुं नाभिभाषितुम्। [4]

बाल्मीकि ने यहां पर करुणा का स्वरूप कितने सुन्दर ढंग से चित्रित किया है। कौशल्या कहती है कि राम का जन्म न हुआ होता ते मुझे एक ही बात का दुःख रहता कि मैं वन्ध्या हूँ किन्तु इस प्रकार की घोर व्यथा वन्ध्या होने पर न सहनी पड़ती। वन्ध्या तो एक मानसिक शोक होता है उसके मन में यह सन्ताप बना रहता है कि मेरे कोई सन्तान नहीं है। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई दुःख उसे नहीं होता। कौशल्या अनेक प्रकार से राम के सम्मुख विलाप करती है तथा अपने द्वारा अनुष्ठित व्रत, दान, संयम, तपस्या आदि की व्यर्थता बतलाती है। [5]

वल्कल वस्त्र कैसे धरण किये जाते हैं इससे सीता सर्वथा अनभिज्ञ थी वे बार–बार उन वस्त्रों को धरण करने का प्रयत्न करती है किन्तु सफल नहीं हो पाती तब राम स्वयं अपने हाथों से उनके रेशमी वस्त्रों के ऊपर वल्कल वस्त्र बाँधते हैं। इस मर्मस्पर्शी दृश्य को देखकर अन्तःपुर की रमणियों के नेत्रों में आंसू छलक उठते हैं। क्या कभी किसी ने स्वप्न में भी यह कल्पना की होगी कि जनक की पुत्री पराक्रमी राजा दशरथ की पुत्रवधू एवं वीर राम की पत्नी के जीवन में भी ऐसा दारुण प्रसंग उपस्थित हो सकता है। यहां पर करुण रस की सरिता निरन्तर रूप से प्रवाहित हो रही है।

राम ने अपनी माताओं के समक्ष हाथ जोड़कर कभी भूल से कहे गये कठोर वचनों के लिए क्षमा मांगी तो सभी के अन्तःकरण शोक संविग्न हो गये। [6] राम वन को चले तो उनके साथ अयोध्या के नर–नारी भी चल दिये। राम के रथ के पीछे बालक, बूढ़े और युवक सभी दौड़ने लगे। अपनी रानियों से घिरे राजा दशरथ अत्यन्त दीन होकर **'प्रियं पुत्रां द्रक्ष्यामि'** ऐसा कहते हुए महल से बाहर निकल आये। उस समय विलाप करती हुई स्त्रियों के आर्त्तनाद से सम्पूर्ण वातावरण शोकमय हो गया–

शुश्रुवे चाग्रतः स्त्रीणां रुदतीनां महास्वनः।
यथा नादः करेणूनां बद्धे महति कुंजरे।। [7]

राम के वनगमन पर दशरथ अकेले ही शोकग्रस्त नहीं होते, अपितु समस्त प्रजा वर्ग भी इस घटना से शोक विह्वल हो जाता है तथा राम को लौटाने के लिए अतिशय प्रयत्न करता है। जो राम के प्रति प्रजा के अनुराग का द्योतक है। [8]

करुण के प्रसंग में आदिकवि ने पशु–पक्षी, वृक्ष इत्यादि जड़–चेतन सभी के द्वारा राम के वियोग में संवेदना प्रकट करना चित्रित किया है। प्रकृति भी राम के साथ सहानुभूति प्रकट करती हुई सी दिखायी गई है। ऐसा लगता है मानो मार्ग में उपस्थित तमसा नदी अपने तिरछे प्रवाह द्वारा राम को वन जाने से रोक रही हो–

एवं विक्रोशतां तेषां द्विजातीनां निवर्तनेः।
ददृशे तमसा तत्र वारयन्तीव राघवम्।। [9]

आदिकवि ने इस प्रसंग की बड़ी मार्मिक योजना की है। राम द्वारा भेजे गये सन्देश में महाराज दशरथ के परिवार की विषमता का वह कटु सत्य था जिसको सुनकर महाराज का तिलमिला उठना स्वाभाविक था। सुमन्त्र ने बताया कि राम ने नेत्रों से आँसू बहाते हुए भरत के लिए सन्देश दिया–

अब्रवीच्चापि मां भूयो भृशमश्रूणि वर्तयन्।
मातेव मम माता ते द्रष्टव्या पुत्रगर्भिनी।। [10]

इससे अध्कि शोक की चरमावस्था और क्या हो सकती है कि चार पुत्रों, सीता जैसी बहु और तीनों रानियों के होते हुए भी राजा दशरथ अनाथवत् मरने की बात कर रहे हैं। इसी प्रसंग में कवि ने राजा दशरथ की मृत्यु के बाद का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढ़ग से प्रस्तुत किया है। उनके मृत्यु से दुःखी सभी रानियां शोक से सन्तप्त होने से मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं–

ततः सर्वा नरेन्द्रस्य कैकेयी प्रमुखाः स्त्रियः।
रुदत्यः शोकसन्तप्ता निपेतुर्गतचेतनाः।। [11]

राम के वनगमन से उत्पन्न भरत की वेदना में शोक के आलम्बनों का समावेश दृष्टिगोचर होता है। उनके शोक में पिता की मृत्यु तथा भ्रातृ वियोग के साथ गम्भीर मूल्यक्षति चेतना भी मिश्रित है।[12] यही कारण है कि भरत के शोक की अभिव्यक्ति ग्लानि के रूप में हुई है। भरत का यह ग्लानि युक्त विषाद कौशल्या के समक्ष अधिक व्यक्त हुआ है।[13] सर्वाधिक शोकोत्पादक सम्पूर्ण अस्तित्व को व्यथित करने वाली अवस्था होती है किसी भी अत्यात्मीयजन का अन्त्येष्टि संस्कार। इस अवसर पर दुष्ट से दुष्ट हृदय भी संसार की असारता को देखकर वैराग्य युक्त हो जाता है। इससे अध्कि करुणा का प्रसंग कोई और नहीं हो सकता। शव को चिता पर रखते समय प्रिय बन्धु–बान्धवों को आलम्बन का मार्मिक अनुभव होता है। इसीलिए इस समय की वेदना अति करुणापूर्ण होती है। मृत व्यक्ति के अभाव की अनुभूति प्रत्यक्ष एवं साकार होकर आश्रय को विपन्न तथा विकल बना देती है।[14] पिता दशरथ की मृत्यु से उत्पन्न भरत का शोक अग्रज राम के वियोग में द्विगुणित हो गया है। दशरथ के परलोक चले जाने पर यह पृथ्वी भरत को विधवा सी प्रतीत होती है। पिता के निधन का यह दारुण समाचार सुनकर राम की आत्मा विलख उठी। भरत के मुख से निकला हुआ मृत्यु वचन राम को वज्र सा लगा। उस अप्रिय समाचार को सुनकर राम दोनों भुजाओं को ऊपर उठाकर वन में कुल्हाड़ी से कटे हुए वृक्ष की भाँति पृथ्वी पर गिर पड़े।[15]

पिता दशरथ के निवास स्थान की शून्यता को देखकर भरत फूट–फूटकर रोते हैं। उनके दुःख तथा अभावगत वेदना का अनुमान लगाने के लिए कवि ने एक समान अनुभूति का उदाहरण दिया है कि भरत को उसी प्रकार अत्यन्त दुःख हुआ जिस प्रकार देवासुर संग्राम में सूर्य के अभाव को देखकर देवता लोग दुःखी होते हैं।[16]

सीता हरण पर राम का शोक उसी प्रकार दिखलाई पड़ता है जैसे हेमन्त ऋतु में कमलिनी हिम से ध्वस्त हो श्रीहीन हो जाती है और प्रत्येक पर्णशाला कान्तिहीन हो गयी–

ददर्श पर्णशालां च सीतया रहितां तदा।
श्रिया विरहितां ध्वस्तां हेमन्ते पद्मिनीमिव।। [17]

बाल्मीकि रामायण में राम द्वारा सीता निर्वासन के समय करुण रस अपने पूर्णपरिपाक पर दृष्टिगत होता है। राम लोक निन्दा के भय से व्यथित होकर सीता का परित्याग कर देते हैं जो उनको अत्यन्त मानसिक पीड़ा देता है और इससे भी अधिक उनके जीवन को विषाद युक्त बनाने वाली पीड़ा सीता के लोकनिन्दा–जन्य कष्ट का कवि ने सजीव चित्राण किया है। [18] सीता की निन्दा से राम के हृदय में जो पीड़ा के कष्ट को उन्होंने अपने भाइयों के समक्ष ही प्रकट किया–

वाष्पपूर्णे च नयने दृष्ट्वा रामस्य धीमतः।
हतशोभं तथा पद्मं मुखं वीक्ष्य च तस्य ते।। [19]

काव्य अथवा नाटक में जो पात्र जितना अधिक गुण सम्पन्न होगा, उसके कष्टों को देखकर सहृदयों को शोक की उतनी ही प्रबल अनुभूति होगी यही कारण है कि जगद्वन्द्य राम और सीता के कष्टों के चित्रण में पाठक करुण रस में आकण्ठ निमग्न हो जाता है सीता गंगा में डूबकर अपने प्राण त्याग सकती थी, किन्तु राम का राजवंश चलता रहना चाहिए यह भाव उन्हें इस कार्य से रोक देता है। भयंकर दुःख के इन क्षणों में भी वे लक्ष्मण के सम्मुख अपने प्राण–वल्लभ के लिए जो संदेश देती है यह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। वे कहती है–

पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धु पतिर्गुरूः।
प्राणैरपि प्रियं तस्माद् भर्तुः कार्यं विशेषतः।। [20]

लक्ष्मण द्वारा सीता को वन में छोड़कर आने पर सीता का शोकपूर्ण विलाप अत्यन्त कारुणिक बन गया है। अपने निर्वासन की बात सुनकर सीता के नेत्राों में जलभर आता है। दो घड़ी के लिए उनकी चेतना भी लुप्त हो जाती है। [21] अत्यन्त दुःखी होकर वे लक्ष्मण से कहती है कि उन्हें तो ऐसा प्रतीत होता है मानो उनका जन्म दुःखों को सहने के लिए ही हुआ है–

मामिकेयं तनुर्नूनं सृष्टा दुःखाय लक्ष्मणः।
धात्रा यस्यास्तथा मेऽद्यदुःखमूर्तिः प्रदृश्यते।। [22]

सीता के वचनों को सुनकर लक्ष्मण मर्माहत हो उठते हैं। उनकी वाणी अवरुद्ध हो जाती है। मुख से शब्द नहीं निकल पाता है। वे धरती पर अपना मस्तक रखकर सीता को प्रणाम कर बाल्मीकि आश्रम से चल देते हैं–

मुहुर्मुहुः परावृत्य दृष्ट्वा सीतामनाथवत्।
चेष्टन्ती परतीरस्थां लक्ष्मणः प्रययावथ।। [23]

लक्ष्मण जाते हुए गंगा के दूसरे तट पर अनाथ की तरह रोती हुई भूमि पर लोटती हुई सीता को बार–बार मुख घुमाकर देखते हैं। सीता की पूर्वोक्त उक्तियों में कितनी विवशता, वेदना तथा व्यंग्य भरा हुआ है। महर्षि की करुणा यहां सीता के रूप में मानो साकार हो गयी है।

बाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण के प्रसंग में राम के हृदय का शोक प्रकट हुआ है। इस प्रसंग में शोकवेग की प्रबलता सात्विक भावों की व्यंजना शक्ति के द्वारा अंकित हुई है। लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम की इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं [24], तथा राम अपने भाई को कराहता हुआ देखकर वे स्वयं मृत्यु का अलिंगन करने के लिए तत्पर हो जाते है। [25] लक्ष्मण के बिना अकेले अयोध्या जाने का विचार ही उन्हें आत्मग्लानि से पूर्ण कर देता है। [26] और राम लक्ष्मण का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि प्रत्येक देश में स्त्रियां मिल सकती हैं बन्धु भी प्राप्त हो सकते हैं। किन्तु ऐसा कोई देश मुझे

नहीं दिखाई देता जहां लक्ष्मण जैसे सहोदर भाई मिल सके–

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।। [27]

आदिकाव्य के प्रतिनायक पक्ष में भी करुण रस का परिपाक कुछ विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है। [28] बालि–वध के प्रसंग में तारा विलाप [29] तथा रावण वध के प्रसंग में मन्दोदरी विलाप [30] प्रतिनायक पक्ष के प्रसंग हैं।

अतः यह सिद्ध होता है कि बाल्मीकि रामायण में करुण रस की पुष्टि अंगीरूप में हुई है। इस करुण रस की अभिव्यक्ति काव्य में सर्वत्र दृष्टिगत होती है जो प्रत्येक सहृदय को प्रभावित करने वाली है।

सन्दर्भ :–

1. बाल्मीकी रामायण, 1/2/15
2. नोदनाथ मिश्र, बाल्मीकि और कालिदास की काव्यकला, पृ. 232
3. बाल्मीकि रामायण, 2/18/3
4. उपरिवत्, 2/20/52–55
5. जज्ञेऽथ तासां संनादः कौंचीनामिव निःस्वनः।
   मानवेन्द्रस्य भार्याणामेवं वदति राघवे। (उपरिवत्, 2/39/40)
6. उपरिवत्, 2/40/29
7. उपरिवत्, 2/45/1–2
8. उपरिवत्, 2/45/32
9. उपरिवत्, 2/58/24
10. उपरिवत्, 2/65/25
11. जगदीश शर्मा, बाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस– सौंदर्य विधान का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 232
12. बाल्मीकि रामायण, 2/75
13. डॉ. महावीर अग्रवाल, बाल्मीकि रामायण में रस–विमर्श, पृ. 101–102
14. बाल्मीकि रामायण, 2/103/2–3
15. उपरिवत्, 2/114/29
16. उपरिवत्, 3/60/5
17. उपरिवत्, 7/42/21
18. उपरिवत्,7/44/16
19. उपरिवत्,7/48/17
20. उपरिवत्, 7/48/1–2
21. उपरिवत्, 7/48/3
22. उपरिवत्, 7/48/24
23. उपरिवत्, 6/10/6
24. उपरिवत्, 6/101/7–8
25. उपरिवत्, 6/101/16–19
26. उपरिवत्, 6/101/15
27. राम प्रकाश अग्रवाल, बाल्मीकि और तुलसी का साहित्यिक मूल्यांकन, पृ. 338
28. बाल्मीकि रामायण, 4/23/3–34
29. उपरिवत्, 6/111/2–90